ध्यान दें:

16

कर्ण का परिताप

कर्णभारम्

जिन कवियों के द्वारा साधारण विषयों को भी असाधारण रूप से प्रतिपादित कर सहृदयों के मन में आनन्द को उत्पन्न किया जाता है उस प्रकार का कवि कौशल ही काव्य है। श्रव्य दृश्य के भेद से काव्य दो प्रकार का है। दृश्य काव्यों में से एक नाटक है। नट अभिनय से यह प्रदर्शित करते हैं। उस नाटक को देखने से सभी के मन में अनायास ही साहित्य रस का उदय होता है। नाटक को अभिनीत किया जाता है इस कारण से उसे पढ़कर पाठक के मन में साक्षात् नाटक के चित्र ही दिखाई देते हैं। नाटक के देखने से तो पढ़ने के परिश्रम के बिना ही आनन्द की अनुभूति होती है। इसी कारण से काव्यों में नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसीलिए कहा गया है काव्यों में नाटक रमणीय है।

नाटकों में भास के नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध है। कर्ण भारम नाटक महाभारत को आधार बनाकर रचा गया है। इसी कारण इस नाटक से महाभारत की कथा ज्ञात होती है। इस नाटक से कर्ण के त्याग की महत्ता को द्योतित किया गया है। अपना जीवन संकट में जानते हुए भी कर्ण ने अपने कवच कुण्डल को ब्राह्मणरूपी इन्द्र को सहर्ष दे दिए। कर्ण का यह त्याग बहुत समय से प्रसिद्ध है। इस प्रकार का त्याग सभी मनुष्यों के लिए सीखने का विषय है। और गुरु कृपा के बिना शिक्षा समय आने पर सफल नहीं होती यह भी जामदग्न्य के वृत्तान्त से जानते हैं। इसीलिए इस नाटक से बहुत से नीति शिक्षा विषयक बोध होंगे। यह नाटक छोटा है इसी कारण से बालकों के पढ़ने के लिए सरल होगा। और व्याकरण कोश आदि ज्ञान के साथ इस नाटक का अध्ययन कर सकते हैं।

इस पाठ को पढ़ने से पाठक महाभारत में स्थित कर्ण के रमणीय वृत्तान्त को जानेंगे। नाटक की शैली कैसी है। भास की सरल शैली यहाँ रमणीय ही है। नाटक के अध्ययन से कवि द्वारा छन्दों का व्यवहार कैसे किया गया यह जानकर नाटक से कैसे नीति शिक्षा को प्राप्त करते हैं इस ज्ञान के लिए यह नाटक अत्यन्त उपयोगी है।

प्रस्तावना

नाटककार का परिचय- महाकवि भास प्राचीनतम संस्कृत दृश्य काव्य रचनाओं में से एक है।

ध्यान दें:

उनके नाटक संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध है। वस्तुत: संस्कृत साहित्य के जगत में नाटक के लिए भास ही अत्यन्त प्रसिद्ध है। उन्होंने 13 नाटकों की रचना की। वे है-1. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, 2. अविमारकम्, 3. स्वप्नवासवदत्तम्, 4. प्रतिमानाटक, 5. मध्यमव्यायोग:, 6. पंचरात्र:, 7. अभिषेक, 8. दूतवाक्यम्, 9. दूतघटोत्कचम्, 10. कर्णभारम्, 11. ऊरुभंगम्, 12. बालचरितम्, 13. चारुदत्तम् चेति। संस्कृत वाङ्मय में कवियों के काल और देश के अनुल्लेख से सभी के जैसे भास के काल और देश के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। फिर भी भास का काल ईसा पू. चतुर्थ शताब्दी से ईसा पू. के अन्दर स्वीकार कर सकते हैं। भास के नाटकों की मातृता केरल में प्राप्त है इस कारण से कुछ विद्वान भास को दक्षिण भारतीय मानते हैं। और भास की कृतियों में उत्तर भारत के स्थानों का अधिकतम वर्णन होने से कुछ विद्वान भास को उत्तर भारतीय मानते हैं। किन्तु अब भी भास का स्थान निश्चित नहीं है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे;

- संस्कृत नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों को जानने में,
- कर्णभारम् नाटक के पात्रों को जानने में;
- चिराचरित नाटक के मंगल को जानने में;
- कर्ण ने कब अर्जुन के लिए प्रस्थान किया। जानने में;
- कुछ कठिन शब्दों को अमरकोष से जान जानने में;
- कुछ विशिष्ट धातु रूप के प्रकृति प्रत्ययों को जानने में;

16.1) नाटक परिचय

16.1.1) नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का परिचय

नान्दी-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥
माङ्गल्यशङ्खचन्द्राब्जकोककैरवशंसिनी।
पदैर्युक्ता द्वादशभिरष्टाभिर्वा पदैरुत॥

अर्थ- जहाँ देव, ब्राह्मण, नृपादि की आशीर्वचनों से युक्त स्तुति होती है वह नान्दी कहलाती है। बारह अथवा आठ पदों से शंख, चक्र, पद्मादि मंगल वाचक शब्दों से नान्दी होती है। नान्दी नाटक से पहले उच्चारित करते हैं।

आमुखम् -

नटो विदुषको वापि पारिपार्श्विक एव वा।
सूत्रधारेण सहिता: संलापं यत्र कुर्वते॥

चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा॥

अर्थ- जहाँ नट विदूषक अथवा अन्य कोई अभिनेता सूत्रधार के साथ नाटक की कथा के विषय में वार्तालाप करते हैं तब वह आमुख कहलाता है। और उसे प्रस्तावना नाम से भी कहा जाता है।

सूत्रधार-

आसूत्रयन् गुणान् नेतुः कवेरपि च वस्तुना।
रंगप्रसाधनप्रौढ़ः सूत्रधार इवोदितः॥
नाटयस्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो मतो बुधैः॥

अर्थ- जो रंग प्रसाधनों में प्रौढ़ नायक के गुणों को वर्णित करता है वह सूत्रधार कहलाता है। नाटक के उपकरण आदि सूत्र कहलाते हैं, उस सूत्र को जो धारण करता है वह सूत्रधार है ऐसा विद्वानों के द्वारा कहा गया है।

नेपथ्यम्- 'कुशीलवकुटुम्बस्य गृहं नेपथ्यमुच्यते।' नट जहाँ विराम काल में रहते हैं उसे नेपथ्यम् कहते हैं।

स्वगतम्- 'अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्।' जो सभी के द्वारा सुनने योग्य नहीं है, उसे स्वगतम् कहते हैं।

प्रकाशम्- 'सर्वश्राव्यं प्रकाश स्यात्।' जो सभी के द्वारा सुनने योग्य हो उसे प्रकाशम् कहते हैं।

16.1.2) कर्णभार नाटक के पात्रों का परिचय

कर्णभारम् नाटक का वृत्त महाभारत को उपजीव्य मानकर रचा गया है। महाभारत के शान्ति पर्व और सभा पर्व में यह प्रसंग है। कर्ण इन्द्र को कवच कुण्डल प्रदान करता है। और उस इन्द्र से मायावी शक्ति को प्राप्त करता है। वहाँ इस प्रकार वृत्त को वर्णित किया गया है। महाभारत को उपजीव्य मानकर रचना करने के कारण महाभारत के ही कुछ पात्रों को यहां स्वीकार किया गया है।

- कर्णः - सूर्यपुत्र कर्ण, अंगदेश का कौरव सेनापति।
- शल्यः - शल्यराज कर्ण का सारथि।
- भटः - सूचक।
- शक्रः - ब्राह्मणरूपधारी इन्द्र।
- देवदूतः - इन्द्र का सन्देशवाहक।

पाठगत प्रश्न-1

1. महाकवि भास किसलिए प्रसिद्ध हैं?
2. किस काव्य का आश्रय लेकर इस नाटक को रचा?

ध्यान दें:

3. नेपथ्यम् क्या है?

4. कर्ण के सारथि का क्या नाम था?

5. इस नाटक में कितने पात्र हैं?

16.2) नाटक का मूल पाठ

प्रथमोऽङ्कः।

(नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः)

सूत्रधारः -

नरमृगपतिवर्ष्मालोकनभ्रान्तनारी-
नरदनुजसुपर्वव्रातपाताललोकः।
करजकुलिशपालीभिन्नदैत्येन्द्रवक्षाः
सुररिपुबलहन्ता श्रीधरोऽस्तु श्रिये वः॥1॥

व्याख्या

श्लोकअन्वय-नरमृगपतिवर्ष्मालोकन-भ्रान्त-नारी-नर-दनुज-सुपर्व-व्रात-पाताल-लोकः करज-कुलिश-पालीभिन्नदैत्येन्द्रवक्षाः सुररिपुबलहन्ता श्रीधरः वः श्रिये अस्तु॥1॥

व्याख्या- मृगों के पति मृगपति सिंह, नरमृगपति नृसिंह, और उसका जो विग्रह हुआ शरीर उसके अलौकिक दर्शन से स्त्री, पुरुष, दानव, देवगण और पातालवासी चकित हुए। हाथ के वज्र समान नखों के अग्रभाग से हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को विदीर्ण किया जिसने वह। दानव सेनाओं के विनाशक भगवान नृसिंह तुम सब नाटक दर्शकों और श्रोताओं के लिए कल्याणकारी हो। मालिनी छन्द॥1॥

सरलार्थ- नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार मंच पर प्रवेश करके इस श्लोक को कहता है। इस श्लोक में सूत्रधार भगवान नृसिंह की स्तुति करते हुए सभी के मंगलविधान के लिए प्रार्थना करता है। वह कहता है कि जो नृसिंह को देखकर नर नारी राक्षस देव और पाताल लोकवासी आश्चर्यचकित हुए और जिसने वज्र के समान नाखूनों के अग्रभाग से हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को विदीर्ण किया, दानव सेनाओं के विनाशक वह भगवान श्रीधर विष्णु हम सबका मंगल करें ऐसी कामना है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- दनुजः - असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः इति।
- सुपर्वा - अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः। सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः इति॥
- रिपुः - रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः इति।

16.3) मूल पाठ

एवमार्यमिश्रान् विज्ञापयामि। (परिक्रम्य, कर्णं दत्वा।) अये किं न खलु मयि विज्ञापनव्यग्रे शब्द इव

श्रूयते। अंग! परश्यामि।

(नेपथ्ये)

भो भो! निवेद्यतां निवेद्यतां महाराजायांगेश्वराय।
सूत्रधारः - भवतु। विज्ञातम्।
संग्रामे तुमुले जाते कर्णाय कलितांजलिः।
निवेदयति सम्भ्रान्तो भृत्यो दुर्योधनाज्ञया॥2॥

(निष्क्रान्तः)

व्याख्या- इस प्रकार आर्य कुल शील आदि गुणों से युक्त सभ्य मनुष्य, पूजा के योग्य श्रेष्ठ सामाजिकों को सूचित करता हूँ।

श्लोक अन्वय- संग्रामे तुमुले जाते सम्भ्रान्तः भृत्यः दुर्योधनाज्ञया कलितांजलि सन् कर्णाय निवेदयति॥2॥

व्याख्या- भयंकर युद्ध में उत्पन्न हुए व्याकुल चित्त राज सेवक दुर्योधन की आज्ञा से हाथ जोड़े हुए कर्ण को सूचित करते हैं। इसका अर्थ भयंकर युद्ध होता है। अनुष्टुप् छन्द॥2॥

सरल अर्थ- श्लोक कथन के बाद सूत्रधार सभ्य सामाजिक जनों को, दर्शकों को और पूज्यों को कुछ सूचित करना चाहता है। तब उसने कुछ शब्द सुना। वहाँ किसी ने कहा की अंगाधिपति कर्ण से निवेदन करो।

उसे सुनकर सूत्रधार कहता है- ठीक है, अब मैं समझ गया। उसने क्या समझा श्लोक से कहता है- दुर्योधन की आज्ञा से व्याकुलचित्त सेवक हाथों को जोड़कर महाभयंकर युद्ध के विषय में कर्ण को सूचित करते है। यह कहकर सूत्रधार मंच से निकल जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परिक्रम्य - परि + क्रम + क्त्वा + ल्यप् प्रत्यय।
- निवेद्यताम् - नि + विद् + भावे य। लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- विज्ञातम् - वि + ज्ञा + क्त प्रत्यय
- निवेदयति- नि + विद् + णिच् प्रथम पुरुष एकवचन।
- भृत्यः - भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः इति।

पाठगत प्रश्न-2

6. सूत्रधार ने मंगल श्लोक से किसको नमस्कार किया है?
7. आर्याः कौन है?
8. सेवक कब क्या कर्ण को सूचित करते हैं?

पाठ-16

कर्ण का परिताप

ध्यान दें:

ध्यान दें:

16.4) मूल पाठ

प्रस्तावना

(ततः प्रविशति भटः)।

भटः - भो भो! निवेद्यतां निवेद्यतां महाराजांगेश्वराय युद्धकाल उपस्थित इति।

करितुरगरथस्थैः पार्थकेतोः पुरस्तात्
मुदितनृपतिसिंहैः सिंहनादः कृतोऽद्य।
त्वरितमरिनिनादैर्दुस्सहालोकवीरः
स्मरमधिगतार्थः प्रस्थितो नागकेतुः।।3।।

व्याख्या

श्लोक अन्वय- पार्थकेतोः पुरस्तात् करितुरगरथस्थैः मुदितनृपतिसिंहैः अद्य सिंहनादः कृतः अतः अरिनिनादैः दु:सहालोकवीरः अधिगतार्थः नागकेतुः त्वरितं समरं प्रस्थितः।।3।।

व्याख्या- अर्जुन की ध्वजा के आगे हाथी, अश्वों और रथों पर बैठे उन हर्षयुक्त राजाओं ने आज सिंहगर्जना को किया। इसीलिए शत्रु के शब्दों को सहन करने में असमर्थ, असहनशील परक्रमी, अपराजेय शक्ति वाले नागकेतु, हाथी के चिन्ह वाली ध्वजा है जिसकी उस दुर्योधन ने अत्यन्त तेजी से युद्ध स्थल की ओर प्रस्थान किया। मालिनी छन्द।।3।।

सरलार्थ- सूत्रधार के जाने के बाद मंच पर भट प्रवेश करता है। प्रवेश करके वह कहता है कि युद्ध का समय आ गया है इस बात को महाराज कर्ण से निवेदित करो। फिर भट कहता है कि युद्ध में दुर्योधन ने अर्जुन को लक्षित कर प्रस्थान किया। किसलिए प्रस्थान किया शायद- अर्जुन के रथ के पास में स्थित राजा हर्ष युक्त होकर युद्ध के लिए महागर्जना करते हैं। शत्रु गर्जन शब्द को सुनकर उसकी गर्जना को सहने में असमर्थ दुर्योधन ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उपस्थितः - उप + स्था + क्त प्रत्यय।
- प्रस्थितः - प्र + स्था + क्त प्रत्यय।
- करीः - मतंगजो गजो नागः कुंजरो वारणः करी इति।
- तुरगः - घोटके वीतितुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः इति।
- सिंहः - सिंहो मृग्रेन्द्रः पंचास्यो हर्यक्षः केसरी इति।

16.5) मूल पाठ को समझे।

(परिक्रम्य विलोक्य) अये अंगमहाराजः समरपरिच्छदपरिवृतः शल्यराजेन सह स्वभवनान्निष्क्रम्येत एवाभिवर्तते। भोः किं नु खलु युद्धोत्सवप्रमुखस्य दृष्टपराक्रमस्याभूतपूर्वो हृदयपरितापः।

एष हि-

ध्यान दें:

अत्युग्रदीप्तिविशदः समरेऽग्रगण्यः
शौर्ये च सम्प्रति सशोकमुपैति धीमान्।
प्राप्ते निदाघसमये घनराशिरुद्धः
सूर्यः स्वभावरुचिमानिव भाति कर्णः॥4॥

यावदपसर्पामि।

(निष्क्रान्तः)

व्याख्या

व्याख्या- हे अंगेश्वर अधिपति कर्ण युद्ध के वस्त्रों से शोभित अर्थात् युद्धवेशधारी। शल्यराज के साथ अपने घर से निकलकर यहाँ ही आते है। हे युद्धरूपी उत्सव में सर्वप्रमुख सेनापति अत्यन्त पराक्रमी कर्ण का यह अभूतपूर्व मानसिक संताप कैसा।

श्लोक अन्वय- अत्युग्रदीप्तिविशदः समरे शौर्ये च अग्रगण्यः धीमान् सम्प्रति सशोकम् उपैति। निदाघसमये प्राप्ते घनराशिरुद्धः स्वभावरुचिमान् सूर्यः इव अयम् कर्णः भाति॥4॥

व्याख्या- अत्यन्त पराक्रम से युक्त युद्ध में पराक्रमी बुद्धिमान होकर भी शोक से परितप्त हो रहे हैं। सूर्य के समान कर्ण भी शोभित हो रहा है। जैसे ग्रीष्म काल में सहज प्रकाशित सूर्य जैसे मेघों के द्वारा आच्छादित होकर मलिन कान्ति का हो जाता है वैसे यह कर्ण भी युद्धकाल में शोक से मलिन कान्ति के समान प्रभा हीन प्रतीत हो रहा है। वसन्ततिलका छन्द॥4॥

सरलार्थ- फिर भट मंच की परिक्रमा करके दूर कुछ देखकर कहता है- महाराज कर्ण युद्ध के परिधान को धारण कर शल्यराज के साथ अपने भवन से निकलकर युद्ध स्थल को ही आते हैं। यद्यपि वह योद्धाओं में प्रमुख है। फिर भी उनके मन में अभूतपूर्व चिन्ता दिखाई दे रही है। यह अत्यन्त ही आश्चर्यकारक है। ऐसा कहकर कर्ण कहता है-

शोकग्रस्त कर्ण किस प्रकार से दिखाई दे रहा है भट वर्णित करता है- अत्यन्त दीप्तिमान कर्ण, युद्ध और वीरता में अग्रगण्य, बुद्धिमान भी। किन्तु वह अब शोक से आच्छादित है। जैसे ग्रीष्म काल में सूर्य बादलों से ढका हुआ शोभित नहीं होता, वैसे ही स्वभाव से ही दीप्तिमान शूरवीर कर्ण भी युद्ध के समय पर शोक से ग्रस्त होकर शोभित नहीं होता। ऐसा कहकर कर्ण मंच से निकल जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विलोक्य- वि + लोकि + क्त्वा (ल्यप्) प्रत्यय
- हृदयम् - चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः इति।
- समरः - अस्त्रीयां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ इति।
- अपसर्पामि - अप् + सृप् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- भाति - भा + लट्, प्रथम, पुरुष एकवचन
- निदाघः - ग्रीष्म उष्मकः। निदाघ उष्णोपगम् उष्ण उष्मागमस्तपः इति।

ध्यान दें:

16.6) मूल पाठ

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टः कर्णः शल्यश्च।)

कर्णः

मा तावन्मम शरमार्गलक्षभूता
सम्प्राप्ताः क्षितिपतयः सजीवशेषाः।
कर्तव्यं रणशिरसि प्रियं कुरूणां
द्रष्टव्यो यदि स भवेद्धनंजयो मे॥5॥

व्याख्या

श्लोक अन्वय- मम शरमार्गलक्षभूताः क्षितिपतयः तावत् मा सजीवशेषाः सम्प्राप्ताः। (अद्य) यदि सः धनंजयः मे दृष्टव्यः भवेत् (तर्हि मया) रणशिरसि । कुरूणाम् प्रियं कर्तव्यम् ॥5॥

व्याख्या- कर्ण के बाणों के मार्ग पर लक्षित राजाओं का जीवन शेष नहीं रहता। आज युद्ध दिवस में यदि वह अर्जुन मुझे दिखाई देगा तो, युद्ध भूमि में दुर्योधन आदि कुरुवंशीयों के इष्ट कार्य को करूंगा। आज युद्ध में मैं अर्जुन को जीतकर कौरवों के प्रिय को सिद्ध करता हूँ। प्रहर्षिणी छन्द॥5॥

सरलार्थ- फिर सारथि शल्य के साथ कर्ण प्रवेश करता है। कर्ण अपनी वीरता का स्मरण कर कहता है कि मेरे साथ जिस राजा ने युद्ध किया वे जीवित नहीं हैं, अर्थात् मैंनें युद्ध में सभी राजाओं को पराजित किया और मार दिया। यदि आज युद्ध में अर्जुन दिखाई दे तो आज मैं अर्जुन को मार दूंगा, और उससे दुर्योधनादि कुरुवंशीयों का अभीष्ट होगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कर्तव्यम् - कृ + तव्य प्रत्यय
- दृष्टव्यः - दृश + तव्य प्रत्यय।

पाठगत प्रश्न-3

9. युद्ध के विषय में कर्ण को कौन सूचित करता है?

10. नागकेतु कौन है?

11. सेवक महाराज अंगेश्वर को क्या सूचित करने के लिए आए?

16.7) मूल पाठ

शल्यराज! यत्रासावर्जुनस्तत्रैव चोद्यतां मम रथः।

शल्यः- बाढम्। (चोदयति)

कर्णः- अहो नु खलु।

ध्यान दें:

अन्योन्यशस्त्रविनिपातनिकृत्तगात्र-
योधाश्ववारणरथेषु महाहवेषु।
क्रुद्धान्तकप्रतिमविक्रमिणो ममापि
वैधुर्यमापतति चेतसि युद्धकाले॥6॥

व्याख्या

श्लोक अन्वय- अन्योन्यशस्त्रविनिपातनिकृत्तगात्रयोधाश्ववारणरथेषु महाहवेषु युद्धकाले क्रुद्धान्तकप्रतिमविक्रमिणः मम अपि चेतसि वैधुर्यम् आपतति॥6॥

व्याख्या- परस्पर शस्त्रों के प्रहार से वीर योद्धा, घोड़े, हाथी, रथों को घायल करने वाले, युद्ध समय में क्रोधित यम के समान पराक्रमी है जो उस कर्ण के मन में भी दीनता आ जाती है। वसन्ततिलका छन्द।

सरलार्थ- फिर अर्जुन को मारने के लिए कर्ण शल्यराज को कहता है की जहाँ अर्जुन है वहाँ मेरे रथ को ले चलो। शल्यराज वैसा ही करता है। तब कर्ण ने युद्ध समय में उपस्थित शल्य को पहले कभी भी अनुभूत न की गई व्याकुलता को सूचित करता है। कर्ण कहता है- जो युद्ध में शस्त्रों के प्रहार से शत्रु पक्षीय योद्धा के शरीर को काटता है, अश्वो, रथों और हाथियों का नाश करता है और जिसका पराक्रम साक्षात् क्रोधित यम के समान है उस जैसे वीर कर्ण के मन में भी युद्ध के समय पर सन्तान होता है। आश्चर्यकारी है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चोद्यताम् - चुद् + य लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- आपतति- आ + पत् लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- चेतस - चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः इति।

16.8) मूल पाठ

भोः कष्टम्।

पूर्वं कुन्त्यां समुत्पन्नो राधेय इति विश्रुतः।
युधिष्ठिरादयस्ते मे यवीयांसस्तु पाण्डवाः॥7॥
अयं स कालः क्रमलब्धशोभनो
गुणप्रकर्षो दिवसोऽयमागतः।
निरर्थमस्त्रं च मया हि शिक्षितं
पुनश्च मातुर्वचनेन वारितः॥8॥
भोः शल्यराज! श्रूयतां ममास्त्रस्य वृत्तान्तः।

व्याख्या-

श्लोक अन्वय- पूर्वं कुन्त्यां समुत्पन्नः राधेयः इति विश्रुतः, युधिष्ठिरादयः पाण्डवाः मे यवीयांस॥7॥

ध्यान दें:

व्याख्या- पहले कुन्ती नाम की नारी से उत्पन्न राधा द्वारा पालित राधेय नाम से लोक में प्रसिद्ध है। युधिष्ठिर आदि पांच पाण्डु पुत्र मेरे अर्थात् कर्ण के छोटे भाई हैं। इस प्रकार जानते हुए भी उनका हनन होगा किस कारण दीनता अभिव्यक्त हो रही है। अनुष्टुप् छन्द।

श्लोक अन्वय- गुणप्रकर्ष: क्रमलब्धशोभन: स: काल: अयम् दिवस: आगत:, हि मया शिक्षितम् अस्त्रं निरर्थं च। पुन: च मातु: वचनेन वारित:।।4।।

व्याख्या- गुणों से अस्त्रादि में निपुण प्रदर्शन के द्वारा अति उत्कृष्ट दिनों से प्राप्त वह सुन्दर समय अर्जुन के साथ युद्ध के लिए है, यह प्रतीक्षित दिन आ गया, किन्तु मेरे (कर्ण) के द्वारा सीखी गई अस्त्र विद्या विफल है। और माता कुन्ती के वचन से पाण्डवों का वध भी निषिद्ध है। वंशस्थ वृत्त।

सरलार्थ- अब कर्ण अपने विरह कारण को निरुपित करते हुए कहता है कि मैं ही कुन्ती का ज्येष्ठ पुत्र हूँ, युधिष्ठिर आदि पांच पाण्डव मेरे अनुज हैं। माता के आदेश से मेरे द्वारा पाण्डव वध निषिद्ध है। फिर भी मैं पाण्डवों को मारने के लिए उद्यत हुआ। और मेरे द्वारा बहुत दिनों से प्रतीक्षित वह समय अब आया जब यह प्रमाणित होगा कि मेरे द्वारा अस्त्रविद्या निरर्थक सीखी गई। इस प्रकार कर्ण ने अपने अस्त्र वृतान्त को शल्य के लिए सुनाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विश्रुत: - वि + श्रु + क्त प्रत्यय
- शिक्षितम् - शिक्ष् + क्त प्रत्यय
- काल: - कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराडयम:। कालो दण्डधर: श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तक:।। इति।।

पाठगत प्रश्न-4

12. राधेय कौन है?

13. अस्त्रवृतान्त को कर्ण ने किसके लिए सुनाया?

पाठ सार

- नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार ने रंगमंच पर आकर नृंसिंह रूप धारी विष्णु के वर्णन से मंगल की कामना की है। वैसे ही उसने कहा- जिस विष्णु के नृसिंह रूप को देखकर नर, राक्षस, देवगण और पातालवासी आश्चर्यचकित हुए, और जिसने अपने वज्र के समान नाखूनों से दैत्यराज हिरण्यकशिपु के हृदय को विदीर्ण किया, दानव सेनाओं का विनाशक वह विष्णु तुम सबका मंगल करें। उस समय ही नेपथ्ये में शब्द सुनाई देता है- अंगदेशाधिपति महाराज कर्ण को सूचित करते हैं। नेपथ्य शब्द को सुनकर सूत्रधार कहता है- दुर्योधन की आज्ञा से सेवक 'भंयकर युद्ध होगा' कर्ण के लिए सूचना को देता है। सूत्रधार प्रस्थान करता है। फिर भट आकर अंगदेशाधिपति कर्ण को सूचित करना चाहता है की युद्धकाल आ गया है। अर्जुन की ध्वजा के सामने हाथी, घोड़ों के रथों में स्थित सिंह के समान राजाओं ने सिंहनाद को

ध्यान दें:

किया। शत्रु पक्ष के सहन न करने योग्य सिंहनाद को सुनकर दुर्योधन ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया। उसी समय भट को युद्धवेशधारी कर्ण सारथि शल्यराज के साथ अपने घर निकलते हुए दिखाई दिए। किन्तु कर्ण का मन सन्तप्त दिखा। यह देखकर भट ने कहा कि जैसे ग्रीष्मकाल में बादलों से व्याप्त होकर सूर्य की कान्ति मलिन हो जाती है वैसे ही युद्ध और वीरता में अग्रणी बुद्धिमान कर्ण युद्धकाल में शोक से सन्तप्त होकर शोभित नहीं होते हैं। फिर भट प्रस्थान करता है।

- फिर कर्ण ने अपने सारथि शल्यराज के साथ प्रवेश किया। कर्ण कहता है- इस प्रकार कभी नहीं हुआ कि मेरे बाणों का लक्ष्यभूत राजा कभी जीवित बचा हो। आज यदि युद्ध में अर्जुन दिखाई दे तब अर्जुन की हत्या करके कौरवों के अभीष्ट को पूरा करूंगा। हे शल्यराज, मेरे रथ को अर्जुन के पास ले चलो। फिर कर्ण मन में सोचता है कि जिसकी अतुल्य शक्ति की तुलना क्रुद्ध यमराज के साथ होती है, और जो युद्ध में शस्त्रप्रहार से योद्धाओं, अश्वों, हाथियों और रथों को विदीर्ण करता है, उस कर्ण के मन में युद्ध के समय पर किसलिए इस प्रकार डर का भाव उत्पन्न हुआ। और पुन: मन में कहता है- पूर्व में मैं कुन्ती से उत्पन्न राधेय इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। युधिष्ठिर आदि भाई मेरे छोटे भाई हैं। और अब वह समय आया जिसकी मुझे प्रतीक्षा थी, परन्तु मेरे द्वारा जो अस्त्र विद्या सीखी गई वह बेकार है और कुन्ती के आदेश से पाण्डव वध निषिद्ध है। इस प्रकार कहकर शल्यराज को लक्षित कर उस अस्त्रवृतान्त को सुनाया।

आपने क्या सीखा

- नान्दी, सूत्रधार, प्रस्तावना, नेपथ्यम् इत्यादि नाटक में अधिकता से प्रयुक्त शब्दों का परिचय प्रारम्भ में दिया गया है।
- कर्णभार नाटक की कुछ विशेषताओं की आलोचना की गई है। फिर नाटक के मूल पाठ को उद्धृत करके व्याख्या को किया। वहीं कथासार नीचे दिया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. नान्दी के लक्षण को विवेचित कीजिए।
2. प्रस्तावना को लक्षण सहित प्रतिपादित कीजिए।
3. भास के पांच नाटकों के नाम लिखिए।
4. सूत्रधार कौन है? लक्षण सहित प्रतिपादित कीजिए।
5. नागकेतु कौन और किसलिए कहा गया?
6. शोक सन्तप्त कर्ण को कवि ने किससे उपमित किया है?
7. कर्ण के हृदय परिताप का क्या कारण है?

पाठ-16

कर्ण का परिताप

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. नाटक की रचना के लिए प्रसिद्ध
2. महाभारत
3. कुशीलवकुटुम्ब के घर को नेपथ्य कहते हैं
4. शल्य
5. पांच

उत्तर-2

6. भगवान नृसिंह को
7. कुल, शील आदि गुणों से युक्त सामाजिक जन
8. संग्राम के भयंकर होने पर कर्ण को सूचित करता है की भयंकर युद्ध हो रहा है

उत्तर-3

9. सेवक
10. दुर्योधन
11. अर्जुन के रथ के पास में राजा उल्लासित हैं। दुर्योधन ने अर्जुन को लक्ष्य कर प्रस्थान किया।

उत्तर-4

12. कर्ण
13. शल्य के लिए